

RAMAKRISHNA MISSION VIDYAMANDIRA

(Residential Autonomous College under University of Calcutta)

B.A./B.SC. THIRD SEMESTER EXAMINATION, DECEMBER 2011

SECOND YEAR

SANSKRIT (General)

Paper : III

Date : 22/12/2011

Time : 11 am – 2 pm

Full Marks : 75

1. নিম্নলিখিত যে কোন একটির উত্তর দাও :

[12]

- a) ‘প্রকৃতির কবি কালিদাস’ - একথার ঘোষিতকতা প্রতিপাদন কর। মানব ও প্রকৃতির মধ্যে একটি মধুর ও নিবিড় সম্পর্ক আছে সেটি কিভাবে তিনি অঙ্গিত করেছেন ?
- b) কালিদাসের অভিজ্ঞানশকুন্তলম্ নাটকে দুর্বাসার শাপবৃত্তান্তটি সংযোজনের নাটকীয় তাৎপর্য আলোচনা কর।
- c) ‘তন্মাপি চ চতুর্থোঁ ঙ্ক্লো যত্র যাতি শকুন্তলা’- মন্তব্যটিতে তোমার কতটা সম্মতি আছে তা আলোচনা কর।

2. যে কোন চারটি প্রশ্নের উত্তর দাও :

[$2 \times 4 = 8$]

- a) ‘অভিজ্ঞানশকুন্তলম্’ নাটকে সুত্রধার বর্ণিত গ্রীষ্মকালের দিনগুলির বৈশিষ্ট্য কী ?
- b) দুষ্যস্ত ও শকুন্তলার পুনর্মিলন কোথায় ঘটেছিল ? তাঁদের পুত্রের নাম কো ?
- c) তাত কথকে কোন্ত অঙ্গে দেখা যায় ?
- d) কুলপতি কথ কোথায় কিসের জন্য গিয়েছিলেন ?
- e) শকুন্তলার পতিগৃহে যাত্রায় সঙ্গী ছিলেন কে কে ?
- f) শাপমুক্তির উপায় কি ছিল ?
- g) সানুষত্ব কে ?

3. যে কোন একটির বাংলা বা ইংরাজী অনুবাদ কর :

[6]

- a) বিচিনতযন্তী যমনন্যমানসা
তপোধনং বেত্সি ন মামুপস্থিতম্।
স্মরিষ্যসি ত্঵াং ন স বোধিতোঃপি সন্।
কথাং প্রমত্তঃ প্রথমং কৃতামিব।।
- b) ভবন্তি ন মাস্তুরবঃ ফলাগমৈর্নবাম্বুভির্দুরবিলম্বিনো ঘনাঃ।
অনুদ্ধৃতাঃ সত্পুরূষাঃ সমৃদ্ধিভিঃ স্বভাব এবৈষ পরোপকারিণাম্।।
- c) মুক্তেষু রশিমষু নিরাযতপূর্বকায়া
নিষ্কম্পচামরশিখা নিভৃতোর্ধ্বকর্ণাঃ।।
আত্মোদ্ধৃতৈরপি রজোভিরলংঘনীয়া
ধাবন্ত্যমী মৃগজবাক্ষমযেব রথ্যাঃ।।

4. সপ্তসঙ্গ ব্যাখ্যা লেখ (যে কোন একটি) :

[8]

- a) স্বপ্নো নু মায়া নু মতিভ্রমো নু
ক্লিষ্টং নু তা঵ত্ ফলমেব পুণ্যম্।
অসন্নিবৃত্য তদতীতমেতে
মনোরথা নাম তটপ্রপাতাঃ।।
- b) আপরিতোষাদ্বিদুষাং ন সাধু মন্যে প্রযোগবিজ্ঞানম্।
বলবদপি শিক্ষিতানামাত্মন্যপ্রত্যয় চেতঃ।।

c) अर्थो हि कन्या परकीय एव

तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः ।

जातो ममायं विशदः प्रकामं

प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ॥

5. ये कोन एकटिर भावसम्प्रसारण कर : [6]

a) किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ।

b) भावस्थिराणि जननान्तरसौहृदानि ।

c) हंसो हि क्षीरमादते तन्मित्रा वर्जयत्यपः ।

अथवा

ये कोन दूष्टि विषये टीका लेख :

कुलपति, भरतवाक्य, मातलि, विक्षण्ठक

6. निम्नलिखित प्रश्नगुलिर ये कोन एकटिर उत्तर दाओ : [10]

a) मनुर मतानुसारे दण्ड सम्बन्धे या जान लेख ।

b) मनुसंहिताय उल्लिखित दुर्ग कत प्रकार ? एदेर सम्पूर्ण विवरण दाओ । कोन् श्रेणीर दुर्ग श्रेष्ठ बले विबेचित ? [2+6+2]

c) मनुसंहितार सप्तम अथ्याये परिदृष्ट व्यसन सम्पर्के सम्यक् विवरण दाओ ।

7. बांग्ला वा इंग्रजीते अनुवाद कर (ये कोन एकटि) : [5]

a) अलब्ध्यञ्जैव लिप्सेत लब्धं रक्षेत् प्रयत्नतः ।

रक्षितं वर्धयेच्चैव वृद्धं पात्रेषु निक्षिपेत् ॥

b) एवं वृत्तस्य नुपतेः शिलोञ्छेनापि जीवतः ।

विस्तीर्यते यशो लोके तैलविन्दुरिवाम्भसि ॥

c) सर्वो दण्डजितो लोको दुर्लभो हि शुचिः नरः ।

दण्डस्य हि भयात् सर्वं जगद् भोगाय कल्पते ॥

8. सप्तसन्ध व्याख्या कर (ये कोन एकटि) : [6]

a) बालोऽपि नावमन्तव्यो मनुष्य इति भूमिपः ।

महती देवता ह्येषा नररूपेण तिष्ठति ॥

b) दूत एव हि सन्धते भिन्त्येव च संहतान् ।

दूतस्तत् कुरुते कर्म भिद्यन्ते येन मानवाः ॥

c) त्रैविद्येभ्यस्त्रयीं विद्याद् दण्डनीतिञ्च शाश्वतीम् ।

आन्वीक्षिकीञ्चात्मविद्यां वार्तारम्भांश्च लोकतः ॥

अथवा

ये कोन दूष्टि विषये टीका लेख :

तोषितिक, घाढ़गुण्य, मांस्यन्याय, गिरिदुर्ग ।

9. ये कोन दूष्टि प्रश्नेर उत्तर दाओ : [2×2]

a) मनुसंहितार दूजन प्रथ्यात टीकाकारेव नाम कर ।

b) दूतेर कौ शुण थाका उचित ?

c) दण्डके धर्म बला हय केन ?

- d) युद्धे कोन् कोन् अस्त्र वर्जन करा उचित?
- e) राजा कीरति व्यक्तिदेव मन्त्रीरूपे निर्वाचन करवेन?
10. निश्चिह्निथित अनुच्छेदगुलिर ये कोन एकटि वांलाय अथवा इंड्रेजीते अनुवाद कर : [10]
- a) कदाचित् उद्यानं गच्छता भोजराजेन कोऽपि धारानगरवासी विप्रो लक्षितः। स च राजानं वीक्ष्य नत्रे निमील्य आगच्छन् राजा पृष्ठः- द्विज! त्वं मां दृष्ट्वा लोचने निमीलयसि। तत्र को हेतुः? विप्र आह देव। त्वं वैष्णवोऽसि, विप्राणां नोपद्रवं करोषि। ततस्त्वतो न मे भीतिः। किन्तु कस्मैचित् किमपि न प्रयच्छसि। प्रातरेव कृपणमुखावलोकनात् परतोऽपि लाभहानिः स्यादिति लोकोक्त्या लोचने निमीलिते।
- b) अवन्तीषु आयोदधौम्यो नाम आचार्यः प्रतिवसति स्म। तस्य अन्यतमः शिष्यः आरुणिः नाम। पाठे स मनोयोगी आचार्ये च भक्तिमान् आसीत्। एकदा गुरुस्तं प्रादिशत्-वत्स! मम शास्यक्षेत्रात् जलं वहिर्गच्छति। गच्छ शीघ्रम्। आलिवन्धनं कुरु। रक्ष जलम्। आदेशमात्रेण स क्षेत्रमगच्छत्। जलरक्षणाय बहुधा यत्नमकरोत्। परन्तु तीव्रजलवेगात् तस्य चेष्टा निष्फला जाता। आचार्यस्यादेशलङ्घनभयात् स तत्र केदारखण्डे अशेत।

